२. खोया हुआ आदमी

– सुशांत सुप्रिय

कई वर्षों की बात है । एक पुराना गाँव था । एक आदमी न जाने कहाँ से भटकता हुआ दूर-दराज के उस गाँव में आ पहुँचा था । गाँव के कुत्तों ने जब चीथड़ों में लिपटे उस अजीब आदमी को देखा तो उन्हें वह कोई पागल लगा । वे उसपर बेतहाशा भौंकने लगे । गाँव के बच्चे खेल रहे थे । कुत्तों की देखा-देखी गाँव के बच्चे भी पूरी दोपहर उसे छेड़ते और तंग करते रहे । आश्चर्य की बात यह थी कि वह आदमी उन बच्चों को कुछ बोल नहीं रहा था । संयोग से किसी भले आदमी ने गाँव के बच्चों को उसपर पत्थर फेंकते हुए देख लिया । जब वह भला आदमी उस आदमी के करीब गया तो उसके चेहरे पर मौजूद खोएपन के भाव के बावजूद उसे उस में गरिमा के चिह्न दिखे । 'यह आदमी पागल नहीं हो सकता'-उसने सोचा । गाँव के उस आगंतुक भले व्यक्ति ने उस आदमी से उसका नाम-पता पूछा, पर वह कोई उत्तर नहीं दे सका । वह केवल इतना बोल पाया, ''शायद मैं खो गया हूँ !'' यह सुनते ही गाँव के उस भले व्यक्ति ने निश्चय किया कि वे सब उसे 'खोया हुआ आदमी' कहकर बुलाएँगे ।

खोया हुआ आदमी इतना खोया था, इतना खोया था कि उसकी पूरी स्मृति का लोप हो चुका था । उसके जहन से उसका नाम और पता पूरी तरह खो चुके थे । न उसे अपनी जाति पता थी, न अपना धर्म । लेकिन अपने खोएपन में भी उसमें परिचित-जैसा कुछ था, जो उसे अपना-सा बना रहा था । लिहाजा जब उसे गाँव के अन्य लोगों के पास ले जाया गया तो उसे देखते ही सभी एक स्वर में बोल उठे, ''अरे, यह खोया हुआ आदमी तो बेहद अपना-सा लग रहा है ।'' उन्होंने उसे अपने ही गाँव में रख लेने का फैसला किया । वह आदमी भी उस गाँव में रहने के लिए तैयार हो गया ।

खोए हुए आदमी की आवाज बहुत मधुर थी । कभी-कभी वह अपनी सुरीली आवाज में कोई पुराना गीत गाता था । उस गाँव की गाय-भैंसें उसके गीत की स्वर-लहरियों से मंत्रमुग्ध होकर ज्यादा दूध देने लगतीं । गाँव के बच्चे उसका गीत सुनकर उसकी ओर खिंचे चले आते । गाँव के बड़े-बुजुर्गों को भी उसके गीत उनकी युवावस्था के सुंदर अतीत की याद दिलाते । गाँव के लोगों ने पाया कि जब से वह खोया हुआ आदमी वहाँ आया था, गाँव के फूल और सुंदर लगने लगे थे, गाँव की तितलियाँ ज्यादा मोहक लगने लगी थीं, गाँव के जुगनूँ ज्यादा रोशन लगने लगे थे । गाँव के बच्चे भी अब ज्यादा खुश रहने लगे थे क्योंकि बच्चों को वह सम्मोहित कर देने वाले कमाल के गीत सुनाता था । गाँव के कुत्ते अब उसके सगे हो

परिचय

जन्म : १९६८, पटना (बिहार)

परिचय : रचनाधर्मिता सुशांत सुप्रिय जी के जीवन का अभिन्न अंग है । आपकी रचनाएँ जीवन की सच्चाइयों और विडंबनाओं का सीधे-सीधे साक्षात्कार करवाती हैं । आपने हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी और पंजाबी में भी लेखन कार्य किया है । आपकी लगभग ५०० रचनाएँ विविध प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : 'एक बूँद यह भी' (कविता संग्रह), 'हत्यारे तथा हे राम' (कथा संग्रह), 'इन गांधीजीज कंट्री' (अंग्रेजी कविता संग्रह) आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत वर्णनात्मक कहानी में 'खोया हुआ आदमी' के माध्यम से लेखक ने समाज में व्याप्त ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, जाति-पाँति आदि कुरीतियों को भुला देने के लिए प्रेरित किया है । इस कहानी से यह ज्ञात होता है कि अपने अच्छे कार्यों से कोई भी आदमी पशु-पक्षी, मानव सबसे आदर प्राप्त कर सकता है । यहाँ लेखक ने सभी को सौहार्द से रहने की सीख प्रदान की है और लोगों को अपनी ऊर्जा सकारात्मक काम में लगाने को कहा है ।

NitinTonpe.com

गए थे । वे उसके आस-पास ऐसे चलते जैसे उसे 'गार्ड ऑफ ऑनर' दे रहे हों।

उन्हीं दिनों गाँव की एक वृद्धा को सपना आया कि वह खोया हुआ आदमी दरअसल उसका ही बेटा था जो बचपन में कहीं खो गया था। वह एक गरीब स्त्री थी, जो घास काटकर, उपले थापकर और पेड़-पौधों की लकड़ियाँ इकट्ठा कर अपना जीवन चलाती थी । उसने खोए हुए आदमी को अपने सपने के बारे में बताया । खोए हुए आदमी ने खुशी-खुशी उस वृद्धा को अपनी माँ मान लिया और उसके साथ रहने लगा । खोए हुए आदमी ने अपनी 'माँ' की इतनी सेवा की कि वृद्धा को लगा कि उसका जीवन धन्य हो गया।

धीरे-धीरे गाँववालों को खोए हुए आदमी के कई गुणों के बारे में पता चलने लगा । वह पशु-पक्षियों से बातें करता प्रतीत होता । लगता था जैसे वह पशु-पक्षियों की भाषा जानता हो । वह आँधी, तूफान, चक्रवात आने, ओले पड़ने या टिड्डियों के हमले के बारे में गाँववालों को पहले ही आगाह कर देता । उसकी भविष्यवाणी के कारण गाँववाले मुसीबतों से बच जाते। जब एक बार गाँव में सूखे की स्थिति उत्पन्न हो गई तो खोए हुए आदमी ने आकाश की ओर देखकर न जाने किस भाषा में किस देवता से प्रार्थना की। कुछ ही समय बाद गाँव में मूसलाधार बारिश होने लगी । सूखी-प्यासी मिट्टी तृप्त हो गई । बच्चे-बड़े सभी इस झमाझम बारिश में भीगने का भरपूर आनंद लेने लगे । उस दिन से खोया हुआ आदमी गाँव में सबका चहेता हो गया ।

गाँव के किनारे कुछ घर दलितों के थे और कुछ मुसलमानों के । गाँव की कुछ जाति के लोग उनसे अलग रहते थे । खोए हुए आदमी ने दलितों और मुसलमानों से भी मित्रता कर ली । वह दैनिक कामों में उनकी मदद कर देता । उनके कर्तव्य समझाता । उन्हें उनके अधिकारों के बारे में बताता। देखते-ही-देखते गाँव के दलित अपने हक की माँग करने लगे । उधर गाँव के बड़े-बूढ़ों पर भी खोए हुए आदमी के समझाने का असर हुआ। धीरे-धीरे दलितों का शोषण बंद हो गया । आपसी भाईचारा बढ़ने लगा। गाँव के सभी जाति-धर्म के लोग, हिंदू और मुसलमान मिल-जुलकर ईद और होली-दीवाली मनाने लगे । इस तरह गाँव में सांप्रदायिकता और जातिवाद को दूर करने में खोए हुए आदमी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई । सभी प्रकार के झगड़े-टंटे समाप्त हो गए । यदि कोई विवाद होता भी तो बैठकर वे आपस में निपटा लेते ।

उसके आने से गाँव में एक और बदलाव आया । पहले गाँव में स्त्रियों की दशा ठीक नहीं थी । खोए हुए आदमी ने स्त्रियों को अपने अधिकारों के

संभाषणीय

'सांप्रदायिक सौहार्द' पर अध्यापक के साथ चर्चा कीजिए ।

लेखनीय

'प्रतिभा जन्मजात होती है परंतु उसके पल्लवन हेतु उचित वातावरण की आवश्यकता होती है' विषय पर भाषण का नमूना तैयार कीजिए ।

NitinTonpe.com

लिए लड़ना सिखाया। गाँव की सभी स्त्रियाँ, पुरुषों की ज्यादतियों के खिलाफ एकजुट हो गईं । खोए हुए आदमी के समझाने का असर भी हुआ । धीरे-धीरे स्त्रियों के विरुद्ध अत्याचार समाप्त हो गए । उन्हें भी सम्मान मिलने लगा । वे भी बड़ों की बातों को महत्त्व देने लगीं ।

इस गाँव से करीबी कस्बे की दूरी तीन दिन की थी । गाँव में खेती की जमीन तो थी पर कभी अच्छा बीज नहीं मिलता तो कभी खाद नहीं मिलती । खोए हुए आदमी ने गाँववालों को प्रेरित किया कि वे गाँव में ही अच्छे बीज और जैविक खाद की दूकान खोल लें । वह खुद लोगों के खेत में मेहनत करता, खेती-बाड़ी में उनकी मदद करता । गाँववाले भी खूब परिश्रम करने लगे । उसकी मदद गाँववालों के लिए खुशहाली ले आई । गाँव का तालाब मछलियों से भर गया । गाँव के पेड़ फलों से लद गए । खेतों में फसलें लहलहाने लगीं । मौसम अच्छा बना रहा । गाँववालों ने इन सबका श्रेय खोए हुए आदमी को दिया। उन्हें लगा जैसे उसकी उपस्थिति में बरकत थी। धीरे-धीरे वह पूरे इलाके में लोकप्रिय हो गया । पड़ोस के अन्य गाँवों के लोग भी उसके प्रशंसक बन गए ।

शुरू-शुरू में कुछ लोग उसे प्रश्नवाचक निगाहों से देखते थे पर खोए हुए आदमी का चेहरा इतना विश्वसनीय और उसका व्यवहार इतना सरल और सहज था कि धीरे-धीरे उसके आलोचक भी उसके प्रशंसकों में बदल गए । लोगों को लगता था कि उसके पास कोई जादुई शक्ति है जिससे वह आसानी से समस्याओं के हल ढूँढ़ लेता है । हालाँकि खोए हुए आदमी ने हमेशा इस बात का खंडन किया । वह हर सफलता को गाँववालों के कठिन परिश्रम का परिणाम बताता था ।

वह लोगों से कहता-''आप सबके पास भी वही शक्तियाँ हैं, खुद को पहचानो । अपनी ऊर्जा को रचनात्मक और सकारात्मक कामों में लगाओ । जुड़ो और जोड़ो ।'' इस तरह खोए हुए आदमी ने इलाके के लोगों में नया विश्वास भर दिया । लोगों में नया जोश, नया उत्साह आ गया ।

पर अंत में वह दिन भी आ पहुँचा । एक रात मौसम बेहद खराब हो गया । बादलों की भीषण गड़गड़ाहट के साथ आकाश में बिजली कड़कने लगी । तभी कई सूर्यों के चौंधिया देने वाले प्रकाश ने रात में दिन का भ्रम उत्पन्न कर दिया ।

फिर वज्रपात जैसी भयावह गड़गड़ाहट के साथ गाँव में कहीं बिजली गिरी । लोग अपनी साँसों की धुक-धुकी के बीच अपने-अपने घरों में दुबके हुए थे । सारी रात मौसम बौराया रहा । लोगों का कहना है कि उस रात गंधक की तेज गंध पूरे गाँव में फैल गई थी और मकानों की खिड़कियों-दरवाजों की झिर्रियों में से घुसकर यह सभी घरों में समा गई

'सरकारी ग्राम विकास योजना' की जानकारी पढ़िए तथा इसके मुख्य मुद्दे बताइए ।

विविध अवसरों पर गाए जाने वाले लोकगीत सुनिए । अपनी मातृभाषा का एक लोकगीत सुनाइए ।

NitinTonpe.com

थी। बाद में पता चला कि यह शहर के कारखानों से गैस रिसाव एवं विस्फोट का दुष्परिणाम था।

सुबह जब मौसम साफ हुआ तब गाँववालों ने पाया कि वह खोया हुआ आदमी अब उनके बीच नहीं था। वह गायब हो चुका था। गाँववालों ने उसे बहुत ढूँढ़ा पर उसका कोई पता नहीं चला। न जाने उसे जमीन निगल गई थी या आसमान खा गया था। उसकी तलाश में आस-पास के गाँवों में गए सभी लोग खाली हाथ लौट आए। गाँव की गलियाँ उसके बिना सूनी लगने लगीं। पशु-पक्षी उसके बिना उदास हो गए। गाँव के बच्चे उसके बिना बेचैन लगे। गाँव के कुत्तों की आँखों में भी आँसू थे।

दुखी गाँववालों ने खोए हुए आदमी की याद में उसकी एक मूर्ति बनाकर गाँव के बीचोबीच स्थापित कर दी। पंचायत की सभी बैठकें अब इसी मूर्ति के पास हुआ करतीं। गाँववालों ने प्रण लिया कि वे उस खोए हुए आदमी के दिखाए मार्ग पर चलेंगे। आज भी यदि आप उस गाँव में जाएँगे तो आपको उस खोए हुए आदमी की वहाँ स्थापित मूर्ति दिख जाएगी।

लेकिन आपको असली बात बताना तो मैं भूल ही गया। खोए हुए आदमी के गायब होने के कुछ समय बाद जब जनगणना अधिकारी जनगणना के काम से इस गाँव में पहुँचे तो किसी को भी न तो अपनी जाति याद थी, न अपना धर्म याद था। धर्म और जाति के बारे में उनकी स्मृतियाँ उस खोए हुए आदमी के साथ ही जैसे सदा के लिए खो चुकी थीं। काश, अपने गाँव-शहर में हमें भी ऐसा 'खोया हुआ आदमी' मिल जाता !

('पिता के नाम' संग्रह से)

— o —

शब्द संसार

बेतहाशा क्रि. वि. (फा.) = बड़ी तेजी से, बहुत घबरा कर और बिना सोचे-समझे

गरिमा स्त्री. सं.(सं.) = गौरव

लोप पुं. सं. (सं.) = नाश, क्षय

फैसला पुं.सं.(अ.) = निर्णय, निपटारा

ज्यादतियाँ स्त्री. सं.(सं.)= अन्याय, परेशान करने की वृत्ति

बरकत स्त्री. सं.(अ.)= समृद्धि, संपन्नता

वज्रपात पुं.सं.(सं.) = सहसा होने वाला बहुत बड़ा अनिष्ट, आघात

मुहावरे

आगाह कर देना = सचेत करना

खाली हाथ लौटना = कुछ भी न पाना

जमीन का निगल जाना
आसमान का खा जाना } = लापता हो जाना

NitinTonpe.com

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–**

(१) कृति पूर्ण कीजिए :

खोए हुए आदमी के गीत से प्रभावित होने वाले :

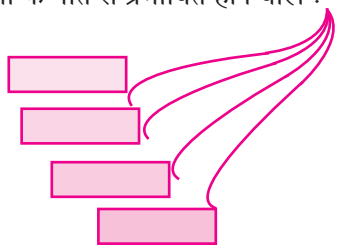

(२) उत्तर लिखिए :

खोए हुए आदमी के आने से गाँव की बदली हुई स्थिति

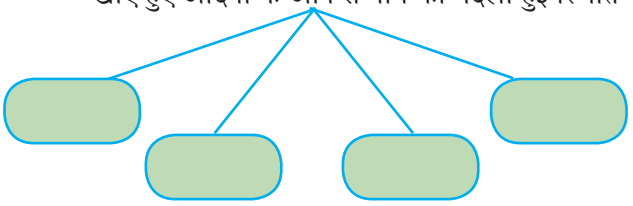

(३) ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों :

भविष्यवाणी, झमाझम बारिश, खुशहाली , गंधक

(४) दिए गए निर्देश के अनुसार परिवर्तन कीजिए :

अभिव्यक्ति

'मानवता ही सच्चा धर्म है' पर अपने विचार लिखिए ।

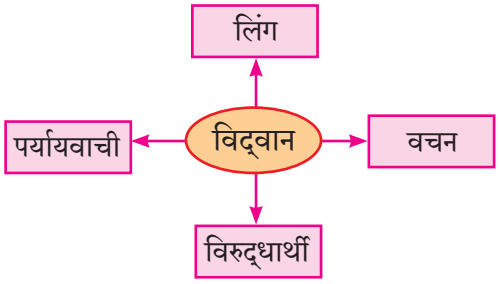

भाषा बिंदु

(१) निम्नलिखित वाक्यों में आए हुए अव्ययों को रेखांकित करते हुए उनके भेद लिखिए :

१. उसके जहन से उसका नाम और पता पूरी तरह खो चुके थे । ------------------

२. ओह ! दिव्या मैं ठीक हूँ । ------------------

३. उसकी भविष्यवाणी के कारण गाँववाले मुसीबतों से बच जाते । ------------------

४. वहाँ से तुलसीनगर पास पड़ता है । ------------------

५. काश, अपने गाँव-शहर में हमें भी 'खोया हुआ आदमी' मिल जाता ! ------------------

६. कभी-कभी मेरा मन उच्चाकाश में उड़ने वाले पक्षियों के साथ अनंत के ओर-छोर नापना चाहता है । ------------------

७. ब्लडप्रेशर भी ज्यादा है पर चिंता की कोई बात नहीं । ------------------

८. इतनी जल्दी लौट जाते हैं । ------------------

(२) निम्नलिखित अव्ययों का सार्थक वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

१. परंतु	२. अरेरे !	३. के समान	४. धीरे-धीरे
५. इसलिए	६. छि !	७. ऊपर	८. के अलावा

उपयोजित लेखन

'विश्वबंधुता वर्तमान युग की माँग' विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।

CGY6K4

NitinTonpe.com